Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. XI, Issue No. XXI, April-2016, ISSN 2230-7540, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

संगीत ग्रंथों में प्रतिपादित श्रुति व्यवस्था - एक मीमांसा

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XI, Issue No. XXI, April-2016, ISSN 2230-7540

संगीत ग्रंथों में प्रतिपादित श्रुति व्यवस्था - एक मीमांसा

घनश्याम दास*

असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत गायन, पंडित जे एल एन राजकीय महाविद्यालय, फरीदाबाद

सार - श्रुति का अर्थ है सुनना। जो कुछ कानों से सुना जाता है, वह सब ध्वनि श्रुति है। जैसे गदहे की गड़गड़ाहट, पटाखों की आवाज, बादलों की गड़गड़ाहट आदि। यह इंगित करता है कि सप्तक के सात स्वरों के भीतर अनंत ध्वनियाँ / नाद हैं। हाँ , बेशक, सप्तक के एक स्वर से दूसरे स्वर में कई ध्वनियाँ हो सकती हैं, लेकिन उन्हें सुनकर, यह भेद करना काफी कठिन है कि यह कौन सी ध्वनि स्पष्ट रूप से है। उसके बाद उन्हें गाना या बजाना व्यावहारिक रूप से कठिन है। इस लेख में संगीत ग्रंथों में प्रतिपादित श्रुति व्यवस्था का अध्यसयन किया गया है

----------X----------

परिचय

भारतीय शास्त्रीय संगीत अपने विकास की यात्रा में अनेक पड़ावों से होकर आधुनिक रूप को प्राप्त हुआ है। इस विकास यात्रा में मध्यकालीन युग में कुछ महत्त्वपूर्ण संगीत ग्रंथ लिखे गए जिनमें बृहद्देशी, संगीत रत्नाकर,संगीत पारिजात एवं संगीत मकरंद आदि प्रमुख हैं। बृहद्देशी से कई शताब्दियों पूर्व लिखे गए भरतनाट्यशास्त्र को संगीत का एक आदि ग्रंथ माना जाता है । यद्यपि मूलतः यह एक नाट्य सम्बन्धी ग्रंथ है लेकिन इसे संगीतजगत में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है क्योंकि संगीत की एक व्यवस्थित जानकारी पहली बार इसी ग्रन्थ में मिलती है। संगीत में प्रयोग होने वाले विभिन्न सूक्ष्म स्वरों तथा संगीत के कई अन्य महत्वपूर्ण तत्त्वों पर पहली बार एक विस्तृत जानकारी इसी ग्रंथ में मिलती है। राग शब्द का उल्लेख भी इसी ग्रंथ में सर्वप्रथम उपलब्ध होता है यद्यपि राग शब्द का जिस रूढ़ अर्थ में आज प्रयोग होता है वैसा प्रयोग वहाँ पर नहीं मिलता ।

नाट्यशास्त्र के बाद लिखे गए बृहद्देशी एवं संगीतरत्नाकर आदि ग्रंथों ने भी नाट्यशास्त्र द्वारा स्थापित जानकारी को ही आगे बढ़ाने का कार्य कुशलतापूर्वक किया गया । नाट्यशास्त्र के काल से ही हमें देखने को मिलता है कि हमारे पूर्वजों के मन में दो स्वरों के बीच में पाए जाने वाले ध्वनि अंतराल को लेकर काफ़ी जिज्ञासा और सजगता थी।

इसी जिज्ञासा एवं सजगता के परिणामस्वरूप *चतुष्चतुश्चैव षड्जमध्यमपंचमा: द्वे द्वे निषादगांधारौ त्रिस्त्रिऋषभधैवतौ* की अवधारणा सामने आई। इस अवधारणा का अर्थ है कि षड्ज, मध्यम तथा पंचम की चार चार,गांधार एवं निषाद की दो दो तथा ऋषभ और धैवत की दो दो श्रुतियाँ होती है। श्रुति व्यवस्था को समझाने हेतु सारणा चतुष्टयी भी भरतनाट्यशास्त्र में ही प्रतिपादित है। इन सब तथ्यों से कदाचित् यह निष्कर्ष तो निकाला ही जा सकता है कि हमारे पूर्वज इस तथ्य से पूर्णतः परिचित थे कि नैसर्गिक तौर पर स्वरों के बीच में अंतराल समान न होकर असमान होते हैं। इन अंतरालों को समझने समझाने के लिए उन्होंने श्रुति को प्रमाण (unit) के रूप में प्रयोग किया।

इसी सिद्धान्त को नाट्यशास्त्र के उत्तरवर्ती ग्रंथ संगीतरत्नाकर में भी प्रायोगिक रूप में समझाने का प्रयास किया गया।

इन ग्रंथों में श्रुति शब्द को अपने अपने ढंग से समझाने का प्रयास किया गया है। भरतनाट्ययशास्त्र में षड्ज और मध्यम ग्राम की अवधारणा और उनमें आने वाले स्वरों को समझाने के उद्देश्य से श्रुति शब्द का प्रयोग हुआ है।

षड्ज ग्राम की व्याख्या करते हुए श्रुति के संबंध में कहा गया है कि सा म और प की चार चार श्रुतियाँ होती हैं, रे और ध की तीन तीन, ग और ध की दो दो श्रुतियाँ हैं । मध्यम ग्राम में यह श्रुति व्यवस्था क्रमशः 4,3,2,4,3,4,2 हो जाती है। नाट्यशास्त्र में श्रुति शब्द का प्रयोग तो अवश्य हुआ है लेकिन वहां श्रुति शब्द की व्याख्या उपलब्ध नहीं होती । हाँ नाट्यशास्त्र में यह अवश्य कहा गया है कि दोनों ग्रामों में 22 -22 श्रुतियाँ होती हैं।नाट्यशास्त्र में श्रुतियों के अंतराल को समझाने के लिए जो श्लोक आया है वह इस प्रकार है : तिस्रो द्वे चतश्रश्च ,,,,,,,,,,,,,

www.ignited.in

। इसके आगे उन्होंने कहा है कि मध्यम ग्राम में पंचम एक श्रुति अपकृष्ट रहता है जिस कारण वह त्रिश्रुतिक रह जाता है। इस सब को समझाने के लिए आगे उन्होंने सारणा चतुष्टयी का आश्रय लिया। षड्ज एवं मध्यम ग्राम में मूल अंतर पंचम की श्रुतियों को लेकर है। षड्ज ग्राम में यह चतुश्रुतिक है लेकिन मध्यमग्राम में यह ऋषभ और धैवत की तरह मात्र त्रिश्रुतिक रह जाता है।

नाट्यशास्त्र के बाद और संगीत रत्नाकर से पूर्व लिखे गए बृहद्देशी में तो श्रुति शब्द ध्वनि के पर्याय के रूप में ही प्रयोग हुआ है। संगीत रत्नाकर में भी श्रुति शब्द नाद के भेद के रूप में ही प्रयोग हुआ है जिसे श्राव्यत्व गुण के कारण ही श्रुति कहा गया है। इस ग्रंथ में भी इसके 22 भेद कहे गए हैं। षड्ज एवं मध्यम ग्राम में प्रयोग होने वाले पंचम की श्रुतियों के अंतर को प्रमाण श्रुति कहा गया है।

शास्त्रीय दृष्टि से यह सब सुनने में तो अच्छा लगता है लेकिन उसकी उपयोगिता तभी है जब हम इसे व्यवहार में प्रयोग कर पाएं। स्वाभाविक प्रश्न यह उठता है कि किसी स्वर की चार, तीन या दो श्रुतियाँ होने का सीधा सा अर्थ तो यह बनता है कि उस स्वर विशेष को उतनी ही जगह गाया बजाया जा सकता है जितनी उसकी श्रुतियाँ हैं लेकिन यह कथन व्यावहारिक नहीं लगता क्योंकि जब हम सा और प की चार श्रुतियाँ मानेंगे तो हमें यह भी मानना पड़ेगा कि इन दोनों स्वरों के चार रूप हैं और इन्हें चार जगह गाया/ बजाया जा सकता है लेकिन ऐसा तो लगभग अकल्पनीय सा है क्योंकि सा के मूल स्थान से नीचे की दिशा में निषाद स्वर का क्षेत्र और सा से ऊपर की दिशा में कोमल रे तथा तदोपरांत शुद्ध रे ही आ जाएगा। सा को तो मात्र एक विशेष तारता पर ही उच्चरित करना पड़ेगा जिस पर हमने आधार वाद्य तानपुरा को स्वर किया है। ठीक इसी प्रकार पंचम से नीचे की ओर तीव्र मध्यम तथा ऊपर की ओर कोमल धैवत का स्थान प्रारम्भ हो जाएगा। ठीक यही स्थिति अन्य स्वरों के साथ भी रहेगी। रे,ध और नि के एक से अधिक प्रयोग हम व्यावहारिक रूप में आज भी करते हैं। जब हम तानपुरा को पंचम स्वर में सुर करते हैं तो स्वाभाविक रूप से प्राप्त होने वाला ऋषभः चतुश्रुतिक रहता है लेकिन जब हम तानपुरे को माध्यम स्वर में मिलते हैं तो स्वाभाविक तौर से उससे निकलने वाला ऋषभ अपेक्षाकृत नीचा होता है। इसे हम त्रिश्रुतिक ऋषभ कह सकते हैं। यदि पंचम पर मिलाए हुए तानपुरे से निकलने वाले ऋषभ को रिकॉर्ड करके रख लिया जाए और इसका मिलान मध्यम पर सुर किए गए तानपुरे से प्राप्त ऋषभ से किया जाए तो यह अंतर स्पष्ट रूप से सुना जा सकता है। कुछ रागों में निषाद स्वर चढ़ा हुआ रहता है तो कुछ में अपेक्षाकृत यह नीचा रहता है। कोमल स्वरों के मामले में तो हम विभिन्न रंगों में रे ,ग, ध और नि के विभिन्न रूप देखते ही हैं ।जैसे मारवा का ऋषभ श्री के ऋषभ की तुलना में नीचा रहता है। ध्वनि के इसी अंतर को हम श्रुति के रूप में देखते हैं ।

इन सब तथ्यों के मद्देनज़र हम यह तो कह सकते हैं कि अमुक् दो स्वरों के बीच इतनी श्रुतियों का अंतराल है लेकिन अमुक् स्वर की अमुक् श्रुतियाँ है - इस वाक्य से स्थिति कुछ स्पष्ट नहीं हो पाती। ऐसा कहने से बात सम्भवतः अधिक स्पष्ट हो पाती है कि इन दो स्वरों के बीच इतनी श्रुतियों का अंतराल है। संगीत के इन ग्रंथों में प्रतिपादित इन जानकारियों का आधुनिक वैज्ञानिक विश्लेषण आज कर पाना संगीत विद्यार्थियों के लिए अपेक्षाकृत अधिक आसान है क्योंकि आज हमारे पास ध्वनि की तारता मापने के अत्याधुनिक उपकरण सहजता से उपलब्ध हैं।प्राचीन काल में जब ये सभी ग्रंथ लिखे गए थे तब न तो इतनी बढ़िया गुणवत्ता के संगीत वाद्य उपलब्ध थे न उनमें प्रयोग होने वाली उतनी बढ़िया तारें । उस समय तो चमड़े से बनी तारों का इस्तेमाल होता था। उस समय रेकॉर्डिंग के साधन भी उपलब्ध नहीं थे लेकिन आज हम इन सभी चीजों के मामले में बहुत आगे निकल आए हैं। अतः संसाधनों की दृष्टि से हम संगीत के स्वर्णिम युग में हैं और हमारे पास इन विषयों में अन्वेषण करने की अपार संभावनाएं हैं।

ज्ञान का परिमार्जन एक सतत अन्वेषण की प्रक्रिया से ही होता है अतः हमें अपने पूर्वजों पर इस बात के लिए गौरव और कृतज्ञता का भाव होना चाहिए कि उन्होंने साधनों के अभाव में भी अपनी साधना एवं सूक्ष्म दृष्टि के चलते इतने गहन विषय में प्रवेश करने का एक प्राथमिक द्वार हमारे लिए खोल दिया।

अधिकांश संगीत ग्रंथों में एक सप्तक में कुल 22 श्रुतियों की बात कही गयी है । यद्यपि इस पर सभी ग्रंथ एकमत तो नहीं हैं तथापि एक सप्तक में 22 श्रुतियाँ मानने वाले ग्रंथकार अधिक हैं।

वर्तमान युग में एक सप्तक में बतायी गयी इन बाईस श्रुतियों को प्रायोगिक रूप में प्रतिपादित करने का एक सराहनीय प्रयास पंडित विद्याधर ओक जो कि महाराष्ट्र प्रदेश के निवासी हैं , द्वारा सफलता पूर्वक किया गया है। उनके द्वारा एक सप्तक में आने वाली इन सभी श्रुतियों को एक के बाद एक उत्तरोत्तर करके दिखाया जा रहा है। उन्होंने एक ऐसे हारमोनियम का भी निर्माण किया है जिसके द्वारा इन बाइस श्रुतियों को व्यवहार में प्रयोग किया जा सकता है। ओक साहब के द्वारा जो तथ्यों को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है उसमें आज भी सभी एकमत तो नहीं लेकिन ज्ञान की इस यात्रा में उन्होंने एक महत्त्वपूर्ण कार्य अवश्य किया है। यह सब होने के बावजूद आज भी इस विषय पर शोध की अपार संभावनाएं हैं जिन्हें संगीत के जिज्ञासु शोधार्थी अपना विषय बनाकर संगीत जगत को लाभान्वित कर सकते हैं।

सहायक ग्रंथ सूची

1. श्रीमल्लक्श्य संगीतम्

2. भरतनाट्य शास्त्र

3. बृहद्देशी

4. संगीत रत्नाकर

5. संगीत चिन्तामणि

6. संगीतबोध

7. भारतीय संगीत का इतिहास

Corresponding Author

घनश्याम दास*

असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत गायन, पंडित जे एल एन राजकीय महाविद्यालय, फरीदाबाद